डॉ अंबिकेश कुमार त्रिपाठी
सहायक प्राध्यापक
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय,
मोतिहारी, बिहार


# शांति और संघर्ष अध्ययन

शांति और संघर्ष अध्ययन एक सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र है जो हिंसक और अहिंसक व्यवहारों के साथ-साथ उन प्रक्रियाओं को समझने की दिशा में एक दृष्टिकोण के साथ संघर्षों (सामाजिक संघर्षों सहित) में भाग लेने वाले संरचनात्मक तंत्रों की पहचान और विश्लेषण करता है। यह उन प्रक्रियाओं को समझने की दिशा में एक बौद्धिक दृष्टिकोण है जो एक अधिक वांछनीय मानव स्थिति के लिए आवश्यक है। इस प्रकार, शांति अध्ययन एक अंतःविषयी अध्ययन, शांतिपूर्ण साधनों से संघर्ष की रोकथाम (de-escalation) और समाधान पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है, जिससे संघर्ष में शामिल सभी पक्षों के लिए "जीत" हो। यह युद्ध अध्ययन के विपरीत है, जो संघर्ष में कुशल के जीत की प्राप्ति पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है। शांति एवं संघर्ष अध्ययन में राजनीति विज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, अंतरराष्ट्रीय संबंध, इतिहास, मानव विज्ञान, धार्मिक अध्ययन, और लिंग अध्ययन के साथ इस प्रकृति के अन्य विषय भी शामिल हो सकते हैं।

## एक विषय के रूप में शांति एवं संघर्ष अध्ययन का विकास:

प्रथम विश्व-युद्ध युद्ध एवं शांति अध्ययन के लिए पश्चिमी दृष्टिकोण में एक महत्वपूर्ण मोड़ लाया। हम कह सकते हैं कि शांति अध्ययन की दिशा में शुरुआती चिंतन प्रथम विश्व-युद्ध के बाद शुरू हुआ। 1919 में पेरिस के शांति समझौते के दौरान, जहां फ्रांस, ब्रिटेन और अमेरिका के नेताओं ने क्रमशः जॉर्जेस क्लेमेंको, डेविड लॉयड जॉर्ज और वुडरो विल्सन के नेतृत्व में यूरोप के भविष्य का फैसला किया गया, विल्सन ने शांति के लिए अपने प्रसिद्ध चौदह सूत्री का प्रस्ताव दिया। विल्सन का वह 14 सूत्री प्रस्ताव शांति-निर्माण की दिशा में सैद्धान्तिक रूप से पहला कदम माना जा सकता है। इनमें यूरोपीय साम्राज्यों को राष्ट्र-राज्यों में तोड़ना और राष्ट्र संघ की स्थापना शामिल थे। ये कदम, एक शांतिपूर्ण भविष्य को सुनिश्चित करने के इरादे से, एक शैक्षिक अनुशासन के रूप में शांति और संघर्ष अध्ययन के उद्भव एवं विकास की पृष्ठभूमि थे (लेकिन, जैसा कि केन्स ने बताया था, इस समझौते के द्वारा भविष्य में संघर्ष के लिए बीजारोपण भी किया था)। 1919 में एबरिस्टविद विश्वविद्यालय, वेल्स में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन के लिए पहली बार पीठ की स्थापना की गई, जिसकी स्थापना आंशिक रूप से शांति के कारण को आगे बढ़ाने के लिए किया गया था।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, संयुक्त राष्ट्र प्रणाली की स्थापना ने शांति और संघर्ष के अध्ययन की दिशा में और अधिक कठोर किन्तु व्यापक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए प्रेरणा प्रदान किया। दुनिया भर में उच्च शिक्षा से संबन्धित कई विश्वविद्यालयों में ऐसे पाठ्यक्रम विकसित किए जाने लगे, जो इस अवधि के दौरान युद्ध के संबंध में और अक्सर शांति के सवालों को छूते थे। **संयुक्त राज्य अमेरिका में शांति अध्ययन में पहला स्नातक स्तर पर अकादमिक कार्यक्रम 1948 में मैनचेस्टर विश्वविद्यालय में ग्लेडिस मुइर द्वारा विकसित किया गया था।** चाहे नामित पाठ्यक्रम या पारंपरिक पाठ्यक्रम के रूप में, शांति अध्ययन 1960 के दशक के उत्तरार्द्ध तक तबतक अमरीकी विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं था जबतक कि वियतनाम युद्ध के बारे में शांति-अध्येताओं की चिंताओं ने मजबूर नहीं किया। **जोहान गाल्टुंग** और **जॉन बर्टन** जैसे शिक्षाविदों द्वारा इस क्षेत्र में लगातार लेखन और 1960 के दशक में **जर्नल ऑफ पीस रिसर्च** जैसे मंचों पर शांति अध्ययन संबंधी बहस ने शांति अध्ययन को एक अनुशासन के रूप विकसित होने तथा इसके विषय-क्षेत्र को बढ़ाने में अकादमिक रुचि को दर्शाया।

1980 के दशक के दौरान दुनिया भर में शांति अध्ययन कार्यक्रमों की संख्या में तेजी आई, क्योंकि शांति-अध्येता परमाणु-युद्ध की संभावनाओं के बारे में अधिक चिंतित थे। किन्तु, जैसे ही शीत युद्ध समाप्त हुआ, शांति और संघर्ष अध्ययन पाठ्यक्रम ने अपना ध्यान अंतरराष्ट्रीय संघर्ष से हटाकर राजनीतिक हिंसा, मानव सुरक्षा, लोकतंत्रीकरण, मानव अधिकार, सामाजिक न्याय, कल्याण, विकास और शांति के स्थायी रूपों के निर्माण से संबंधित जटिल मुद्दों

की ओर केन्द्रित किया। अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, एजेंसियों और अंतर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों, संयुक्त राष्ट्र, यूरोप में सुरक्षा और सहकारिता संगठन, यूरोपीय संघ और विश्व बैंक से लेकर अंतर्राष्ट्रीय संकट समूह, अंतर्राष्ट्रीय अलर्ट और अन्य अनेक लोगों का ध्यान इस प्रकार के शोध की ओर आकर्षित होने लगा।

यूरोपीय अकादमिक संदर्भों में सकारात्मक शांति से संबंधित एजेंडा पर पहले ही 1960 के दशक में व्यापक रूप से बहस हुई थी; किन्तु 1990 के मध्य तक संयुक्त राज्य अमेरिका में शांति अध्ययन पाठ्यक्रम को "नकारात्मक शांति के बारे में अनुसंधान और शिक्षण से, सकारात्मक शांति के लिए हिंसा की समाप्ति, हिंसा के कारणों को समाप्त करने वाली स्थितियां" इत्यादि की ओर स्थानांतरित कर दिया गया। परिणामस्वरूप एक विषय के रूप में शांति अध्ययन का क्षेत्र व्यापक हो गया। **1994 में शांति अध्ययन के पाठ्यक्रम की समीक्षा** में "उत्तर-दक्षिण संबंध"; "विकास, ऋण और वैश्विक गरीबी"; ‘‘मानव-सुरक्षा’’; "पर्यावरण, जनसंख्या वृद्धि, और संसाधनों की कमी"; "शांति, सैन्यवाद और राजनीतिक हिंसा पर नारीवादी दृष्टिकोण को भी शामिल किया गया।

आज शांति और संघर्ष के अध्ययन के महत्व पर अन्य सामाजिक विज्ञानों, दुनिया भर के कई प्रभावशाली नीति निर्माताओं और विद्वानों के बीच एक आम सहमति है। शांति और संघर्ष अध्ययन आज व्यापक रूप से शोध और शिक्षण संस्थानों में बड़ी संख्या में शामिल है। शांति और संघर्ष अध्ययन पाठ्यक्रमों की पेशकश करने वाले विश्वविद्यालयों की संख्या का अनुमान लगाना कठिन है, क्योंकि ज्यादातर पाठ्यक्रमों को विभिन्न विभागों से पढ़ाया जा रहा है और उनके नाम बहुत अलग-अलग हैं। इस संबंध में **इंटरनेशनल पीस रिसर्च एसोसिएशन** की वेबसाइट सबसे अधिक आधिकारिक सूची उपलब्ध कराती है। **इंटरनेशनल हेराल्ड ट्रिब्यून** में 2008 की रिपोर्ट में शांति और संघर्ष अध्ययनों में शिक्षण और अनुसंधान के 400 से अधिक कार्यक्रमों का उल्लेख है, विशेष रूप से यूनाइटेड वर्ल्ड कॉलेजों, पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट ओस्लो, कास्टेलोन डी ला प्लाजा स्पेन, अमेरिकन यूनिवर्सिटी, ब्रैडफोर्ड विश्वविद्यालय, संयुक्त राष्ट्र की यूनिवर्सिटी ऑफ पीस, जॉर्ज मेसन विश्वविद्यालय, लुंड यूनिवर्सिटी, मिशिगन यूनिवर्सिटी, नोट्रेडेम यूनिवर्सिटी, क्वींसलैंड यूनिवर्सिटी, उप्साला यूनिवर्सिटी, इंसब्रुक यूनिवर्सिटी, ऑस्ट्रिया यूनिवर्सिटी, वर्जीनिया यूनिवर्सिटी, और विस्कॉन्सिन में शांति विश्वविद्यालय, रोटरी फाउंडेशन और संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय आदि कई अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थान शांति एवं संघर्ष अध्ययन के शिक्षण और अनुसंधान कार्यक्रमों का समर्थन करते है।

1995 के एक सर्वेक्षण में संयुक्त राज्य अमरीका के 136 कॉलेजों में शांति एवं संघर्ष अध्ययन कार्यक्रम संचालित पाए गए: "इनमें से चालीस प्रतिशत चर्च संबंधित स्कूल हैं, एक और 32% बड़े सार्वजनिक विश्वविद्यालय हैं, 21% गैर-चर्च संबंधित निजी कॉलेज हैं, और 1% सामुदायिक कॉलेज हैं। पच्चीस प्रतिशत चर्च से संबंधित स्कूल जिनमें शांति अध्ययन कार्यक्रम हैं वे रोमन कैथोलिक हैं। अन्य उल्लेखनीय विश्वविद्यालय और संस्थानों जैसे कि मैनिटोबा विश्वविद्यालय, हिरोशिमा विश्वविद्यालय, इंसब्रुक विश्वविद्यालय, सिडनी विश्वविद्यालय, क्वींसलैंड विश्वविद्यालय, किंग्स कॉलेज (लंदन), सौल्ट कॉलेज, लंदन मेट्रोपॉलिटन, सबानसी, मारबर्ग, साइन्स पो, एम्स्टर्डम विश्वविद्यालय, ओटागो, सेंट एंड्रयूज और यॉर्क में भी शांति एवं संघर्ष अध्ययन के पाठ्यक्रम देखे जा सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस तरह के कार्यक्रम और शोध एजेंडा अब विकासशील देशों और क्षेत्रों (जैसे: राष्ट्रीय शांति परिषद), मानवाधिकार केंद्र, साराजेवो विश्वविद्यालय, चुललांग विश्वविद्यालय में आम हो गए हैं। पूर्व तिमोर का राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, काबुल विश्वविद्यालय, मेकरेरे विश्वविद्यालय, मबारा विश्वविद्यालय, और तेल अवीव विश्वविद्यालय में भी इस तरह के अध्ययन किए जा रहे हैं। भारत में भी कई प्रमुख विश्वविद्यालय इस क्षेत्र में अध्ययन और अनुसंधान में संलग्न हैं। वाराणसी स्थित बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी में यूनेस्को चेयर फॉर पीस स्थापित है।

यद्यपि व्यक्तिगत विचारक जैसे कि **इमैनुएल कांट** ने शांति की केंद्रीयता (**सतत शांति**) को मान्यता दी थी, किन्तु यह 1950 और 1960 के दशक तक शांति अध्ययन एक अनुशासन के रूप तबतक स्थापित नहीं हो पाया था

जबतक कि यह अपने स्वयं के लिए अनुसंधान उपकरण और अवधारणाओं का एक विशेष सेट विकसित नहीं कर लिया। विभिन्न शोध-पत्रिकाओं में शोध लेखों और सम्मेलनों जैसे चर्चा-परिचर्चा के लिए मंच के साथ एक अकादमिक अनुशासन के रूप में यह विषय उभरने लगा और 1959 से शुरू हुए, पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट ओस्लो-पीआरआईओ - (जोहान गाल्टुंग से जुड़ा) की स्थापना के साथ आज दुनिया में कई शोध संस्थान स्थापित हो चुके हैं।

1963 में, वाल्टर इसार्ड, क्षेत्रीय विज्ञान के प्रमुख संस्थापक, ने **पीस रिसर्च सोसायटी** की स्थापना के उद्देश्य से स्वीडन के माल्मो में विद्वानों के एक समूह को इकट्ठा किया। प्रारंभिक सदस्यों के समूह में **केनेथ बोल्डिंग** और **अनातोल रैपोपॉर्ट** भी शामिल थे। 1973 में यह समूह **पीस साइंस सोसायटी** में परिवर्तित हो गया। शांति की अवधारणाओं को समझने और संघर्ष को कम करने के लिए अवधारणाओं, तकनीकों और डाटा के एक विशेष सेट को विकसित करने के लिए शांति विज्ञान को एक अंतःविषयी और अंतर्राष्ट्रीय प्रयास के रूप में देखा गया। शांति विज्ञान अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान, विशेष रूप से खेल सिद्धांत और अर्थमिति के विकसित मात्रात्मक/परिमाणात्मक तकनीकों के उपयोग करने का प्रयास करता है, अन्यथा शांति अध्ययन के क्षेत्र शोधकर्ताओं द्वारा ऐसे विकसित पद्धतिशास्त्रीय तकनीकों शायद ही कभी उपयोग किया जाता। 'द पीस साइंस सोसाइटी' वेबसाइट '**कॉरेल्ट्स ऑफ़ वॉर**' के दूसरे संस्करण को प्रस्तुत करती है, जो कि अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष पर डाटा के सबसे प्रसिद्ध संग्रहणों में से एक है। 'द पीस साइंस सोसाइटी' एक वार्षिक सम्मेलन भी आयोजित करती है, जिसमें दुनिया भर के विद्वान शामिल होते हैं, और दो पत्रिकाओं – **जर्नल ऑफ कांफ्लिक्ट रेसोल्यूशन** और **कांफ्लिक्ट मैनेजमेंट एंड पीस साइन्स** प्रकाशन भी करती है।

1964 में, क्लेरेन्स (स्विट्जरलैंड) में **क्वेकर्स** द्वारा आयोजित एक सम्मेलन में **इंटरनेशनल पीस रिसर्च एसोसिएशन** (IPRA) का गठन किया गया था। इसकी मूल कार्यकारी समिति में **जोहान गाल्टुंग** भी थे। **IPRA द्विवार्षिक सम्मेलन आयोजित करता है।** इसके सम्मेलनों में प्रस्तुत शोध-पत्रों और प्रकाशनों में आम तौर पर **संस्थागत और ऐतिहासिक दृष्टिकोणों** पर विशेष ध्यान केंद्रित होता, शायद ही कभी मात्रात्मक तकनीकों का प्रयोग किया गया हो। 2001 में, दो प्रमुख संगठनों के विलय के परिणामस्वरूप **पीस एंड जस्टिस स्टडीज़ एसोसिएशन** (पी.जे.एस.ए.) का गठन किया गया था। पी.जे.एस.ए. आई.पी.आर.ए. का उत्तरी अमेरिकी सहयोगी है, और इसमें संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा की प्रमुखता वाले दुनिया भर के सदस्य शामिल हैं। पी.जे.एस.ए. एक नियमित समाचार पत्र (**द पीस क्रॉनिकल**) प्रकाशित करता है; और अनुसंधान, छात्रवृत्ति, अध्ययन-तकनीकी और सक्रियता के माध्यम से "**न्यायपूर्ण और शांतिपूर्ण दुनिया बनाने के लिए**" संगठन के मिशन से संबंधित विषयों पर वार्षिक सम्मेलन आयोजित करता है।

## शांति अध्ययन को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है:

- **यह बहु-विषयक अनुशासन है**। इसमें राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंध (विशेष रूप से महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय संबंध सिद्धांत), समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, नृविज्ञान और अर्थशास्त्र के तत्व शामिल हैं। आलोचनात्मक सिद्धान्त का भी शांति और संघर्ष के अध्ययन में महत्वपूर्ण रूप से उपयोग किया जाता है।
- **यह बहुस्तरीय अनुशासन है**। शांति अध्ययन पारस्परिक शांति, व्यक्तियों, पड़ोसियों, जातीय समूहों, राज्यों और सभ्यताओं के बीच शांति की गहन जांच करता है।
- **यह बहुसांस्कृतिक अनुशासन है**। गांधी को अक्सर शांति अध्ययन के प्रतिमान के रूप में उद्धृत किया जाता है। हालाँकि, सच्चा बहुसंस्कृतिवाद अभी भी एक आकांक्षा बना हुआ है क्योंकि अधिकांश शांति अध्ययन केंद्र पश्चिम में स्थित हैं।

- **यह विश्लेषणात्मक और मानक दोनों है**। एक मानक अनुशासन के रूप में, शांति अध्ययन में मूल्य निर्णय शामिल हैं, जैसे "बेहतर" और "बुरा"।
- **शांति अध्ययन सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों है**। निरस्त्रीकरण के मुद्दों पर लंबे समय से जीवंत बहस हो रही है; साथ ही हथियारों के उत्पादन, व्यापार और उनके राजनीतिक प्रभावों से संबंधित मुद्दों की जांच, कैटलॉग और विश्लेषण करने का भी प्रयास किया गया है। शांति के विरोध के रूप में, युद्ध की आर्थिक लागतों या हिंसा में कमी को मापने का भी प्रयास किया गया है।



आज सामाजिक विज्ञान की परिधि में शांति और संघर्ष अध्ययन अच्छी तरह से स्थापित है। इसमें कई विद्वानों की पत्रिकाएं, कॉलेज और विश्वविद्यालयों के शांति अध्ययन विभाग, शांति अनुसंधान संस्थान, सम्मेलन शामिल हैं, साथ ही साथ एक प्रविधि के रूप में शांति और संघर्ष अध्ययन की उपयोगिता अब सिद्ध हो चुकी है। शांति अध्ययन युद्ध के कारणों और रोकथाम की जांच करने की अनुमति देता है, साथ ही हिंसा की प्रकृति, सामाजिक उत्पीड़न, भेदभाव और हाशिए पर रह रहे लोगों के प्रति अध्ययन को शामिल करता है। शांति अध्ययन के माध्यम से उत्पीड़न पर काबू पाने, समाज को बदलने के लिए शांति-निर्माण की प्रक्रिया और अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को प्राप्त करने के लिए रणनीति भी सीख सकते हैं।

नारीवादी विद्वानों ने सशस्त्र संघर्षों में लिंग की भूमिका की जांच कर शांति और संघर्ष अध्ययनों के भीतर एक विशेषता विकसित की है। संघर्ष के बाद के कार्यों में लिंग की भूमिका पर विचार करने के महत्व को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव 1325 द्वारा मान्यता दी गई थी। **नारीवादी अध्येताओं के उदाहरणों में कैरोल कोहन और क्लेयर डंकनसन का काम शामिल है**।

## शांति की अवधारणा:

**गाल्टुंग का नकारात्मक और सकारात्मक शांति का प्रारूप** आज सबसे अधिक उपयोग किया जाता है। नकारात्मक शांति का तात्पर्य प्रत्यक्ष हिंसा की अनुपस्थिति से है। सकारात्मक शांति का तात्पर्य अप्रत्यक्ष और संरचनात्मक हिंसा की अनुपस्थिति से है। शांति और संघर्ष अध्ययनों में यह ऐसी अवधारणा है जिसे अधिकांश शोधकर्ता अपनाते हैं। कई अवधारणाएँ, मॉडल, या शांति के तरीके सुझाए गए हैं जिनसे शांति अनुसंधान समृद्ध हो सकता है:

- पहला यह है कि, शांति एक ऐसी प्राकृतिक और सामाजिक स्थिति है जहां युद्ध नहीं है। शांति शोधकर्ताओं के लिए आधार स्पष्ट है: निर्णय निर्माताओं का एक तर्कसंगत समूह को पर्याप्त जानकारी प्रस्तुत कराना ताकि युद्ध और संघर्ष से बचने की कोशिश किया जाए।
- दूसरा, ऐसा विचार विकसित किया जाना चाहिए कि हिंसा पापपूर्ण या अकुशल है, और अहिंसा कौशल या गुणवान है। यह विचार दुनिया भर में विभिन्न प्रकार की धार्मिक परंपराओं द्वारा आयोजित भी किया जाता है: क्वेकर्स, मेनोनाइट्स और ईसाई धर्म के भीतर अन्य शांति चर्च; जैन, हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और भारतीय धर्म और दर्शन के अन्य अनेक भागों में, सत्याग्रह की परंपरा; साथ ही इस्लाम के कुछ विचारों में।
- तीसरा, शांतिवाद है: यह विचार कि शांति मानव व्यवहार की एक प्रमुख शक्ति है।
- एक और दृष्टिकोण यह है कि शांति के कई प्रकार हैं।

शांति के विभिन्न रूपों के कई प्रस्ताव हैं। ये विभिन्न प्रस्ताव उदार अंतरराष्ट्रीय और संवैधानिक शांति तथा शांति के लिए योजनाओं पर कांट, लॉक, रूसो, थॉमस पेन के प्रसिद्ध कार्यों से लेकर रेमंड एरॉन, एडवर्ड अजार, जॉन बर्टन, मार्टिन केडल, वोल्फगैंग डिट्रिच, केविन डोले, जोहान गैल्टुंग, माइकल हॉवर्ड, विवियन हेरी, जीन पॉल

लेडेरख, रोजर मैक गिंट्टी, ह्यूग मिआल, डेविड मितरानी, ओलिवर रामशोब्थम, अनातोल रापोपोर्ट, मिकेल वेदबी रासमुसेन, ओलिवर रिचमंड, एसपी उदयकुमार, टॉम वुडहाउस एवं अन्य विद्वानों के हाल के लेखन द्वारा विकसित और परिवर्धीरित हुआ है। शांति एवं संघर्ष अध्ययन में लोकतांत्रिक शांति, उदार शांति, स्थायी शांति, नागरिक शांति, मिश्रित शांति (Hybrid Peace), उदार शांति, ट्रांस-रेशनल शांति और अन्य अवधारणाएं मुख्य रूप से उपयोग की जाती हैं।



## संघर्ष त्रिकोण: जोहान गाल्टुंग

जोहान गाल्टुंग का संघर्ष त्रिकोण इस धारणा पर काम करता है कि शांति को परिभाषित करने का सबसे अच्छा तरीका है हिंसा को इसके प्रतिपक्ष के रूप में परिभाषित करना। यह हिंसा को रोकने, उसके प्रबंधन, हिंसा को सीमित करने और काबू पाने के प्रामाणिक उद्देश्य को दर्शाता है।

- **प्रत्यक्ष (सीधी) हिंसा**: उदाहरण- सीधा हमला, नरसंहार।
- **संरचनात्मक हिंसा**: संरचनात्मक हिंसा संरचना में निहित हिंसा है। यह अप्रत्यक्ष रूप से और संरचना के कारण होने वाली हिंसा है अतः इसे अप्रत्यक्ष हिंसा भी कहते हैं। इसे ईश्वर का कार्य नहीं माना जाता है। उदाहरण के लिए: कुपोषण जैसे परिहार्य कारणों से मृत्यु।
- **सांस्कृतिक हिंसा**: सांस्कृतिक हिंसा उन विवेक-शून्य सांस्कृतिक धारणाओं के परिणामस्वरूप होती है जो प्रत्यक्ष या संरचनात्मक हिंसा के लिए आधार होती हैं। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति बेघर लोगों के प्रति उदासीन हो सकता है, या यहां तक कि उनके निष्कासन को एक अच्छी बात मान सकता है।

गाल्टुंग के संघर्ष त्रिकोण के प्रत्येक कोने अन्य दो से संबंधित हो सकते है। जातीय हिंसा संघर्ष त्रिकोण का अच्छा उदाहरण हो सकता है।

## संघर्ष की लागत:

संघर्ष की लागत एक उपकरण है जो मानव जाति के लिए संघर्ष से हुई हानि की गणना करने का प्रयास करता है। यह विचार न केवल मौतों, हताहतों और संघर्ष में शामिल लोगों द्वारा वहन की गई आर्थिक हानि की जांच करता है,बल्कि संघर्ष की सामाजिक, विकासात्मक, पर्यावरणीय और सामरिक लागत पर भी विचार करता है। यह दृष्टिकोण संघर्ष की प्रत्यक्ष लागतों पर भी विचार करता है, उदाहरण के लिए मानव मृत्यु, व्यय, भूमि का विनाश और भौतिक बुनियादी ढांचे आदि; साथ ही अप्रत्यक्ष लागत जो एक समाज को प्रभावित करती है, उदाहरण के लिए प्रवासन, अपमान, उग्रवाद में वृद्धि और नागरिक समाज की कमी, पर भी विचार करता है।

भारत में एक थिंक टैंक **स्ट्रैटेजिक फोरसाइट ग्रुप** ने **कॉस्ट ऑफ कॉन्फ्लिक्ट सीरीज** जारी की है, जो उन देशों और क्षेत्रों के लिए है जो संघर्षग्रस्त हैं। इस उपकरण का उद्देश्य संघर्ष के अतीत, वर्तमान और भविष्य की लागत का आकलन करना है, जिसमें कई प्रकार के पैरामीटर हैं।

## शांति अध्ययन का उद्देश्य:

शांति अध्ययन का सामान्य उद्देश्य शांति-निर्वहन (Peacekeeping), शांति-निर्माण (Peace-building) (जैसे, अधिकारों, संस्थानों और विश्व-सम्पदा के वितरण में असमानताओं से निपटने) और शांति स्थापना (जैसे, मध्यस्थता और संघर्ष समाधान) के माध्यम से संघर्ष रूपान्तरण और संघर्ष समाधान हैं। शांति-निर्वहन नकारात्मक शांति के क्षेत्र/तत्वावधान में आती है, जबकि सकारात्मक शांति के प्रयासों में शांति निर्माण और शांति-रचना (Peacemaking) के तत्व शामिल हैं। इस प्रकार सकारात्मक शांति में शांति एक सतत प्रक्रिया की तरह है।

## शांति और संघर्ष अध्ययन: मिश्रित, अंतर-तर्कसंगत शांति और संघर्षपूर्ण संघर्ष रूपान्तरण:

शांति और संघर्ष अध्ययन के क्षेत्रों में काम करने वाले विद्वानों ने गैर-सरकारी संगठनों, विकास एजेंसियों, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों और संयुक्त राष्ट्र प्रणाली द्वारा उपयोग की जाने वाली नीतियों, संघर्ष-समाधान के विशिष्ट क्षेत्रों और नागरिक कूटनीति, विकास, राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक सुधार, शांति व्यवस्था, मध्यस्थता, प्रारंभिक चेतावनी, रोकथाम, शांति, और राज्य निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह शांति अध्ययन में संघर्ष-प्रबंधन के **"नकारात्मक शांति"** उन्मुख दृष्टिकोण से संघर्ष-समाधान और शांति-निर्माण के **"सकारात्मक शांति"** उन्मुख उद्देश्य की ओर दिलचस्पी में बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है।



शांति-अध्ययन शीत युद्ध के अंत में तेजी से उभरा, और पूर्व संयुक्त राष्ट्र महासचिव बुतरस बुतरस-घाली के रिपोर्ट, '**एन एजेंडा फॉर पीस**', में विस्तृत तरीके से समझाया गया है। वास्तव में, यह कहा जा सकता है कि इस विषय के बहुत सारे तंत्र/उपकरण इस क्षेत्र अनेक विद्वानों और लेखकों के कार्यों, जिसे "उदार शांति-निर्माण" और "राज्य-निर्माण" कहा गया है, पर आधारित है। हालांकि, कंबोडिया, बाल्कन, पूर्वी तिमोर, सिएरा लियोन, लाइबेरिया, नेपाल, अफगानिस्तान और इराक के रूप में विभिन्न स्थानों में उदार शांति-निर्माण/राज्य-निर्माण की सीमित सफलता के बाद इस विषय के कई विद्वानों ने "सुरक्षा की जिम्मेदारी" (R2P), मानव सुरक्षा, और विशेष रूप से स्थानीय स्वामित्व और ऐसी प्रक्रियाओं में भागीदारी के आधार पर शांति-निर्माण के एक "मुक्तिवादी" स्वरूप की वकालत की है। यह अनुसंधान एजेंडा शांति-निर्माण के लिए एक अधिक सूक्ष्म एजेंडा स्थापित करने की प्रक्रिया में है जो 1960 के दशक के शांति अध्ययन और संघर्ष अनुसंधान स्कूलों में उभरे मूल, गुणात्मक और प्रामाणिकता उन्मुख कार्य से भी जुड़ता है (उदाहरण के लिए ओस्लो शांति अनुसंधान संस्थान की अनुसंधान परियोजना "**लिबरल-पीस एंड एथिक्स ऑफ पीस-बिल्डिंग**" और सेंट एंड्रयूज विश्वविद्यालय में "**लिबरल-पीस ट्रैनजिशन्स**" परियोजना देखें)। शांति-निर्माण के बारे में अधिक महत्वपूर्ण विचार यह है कि हाल के वर्षों में इसने कई यूरोपीय और गैर-पश्चिमी अकादमिक जगत और नीति-निर्माण के हलकों में अपनी जगह बनाया है। रोजमर्रा के अभिविन्यास और उत्तर-उदरवादी शांति के सांकेतिक उद्भव का सुझाव देने के साथ कुछ विद्वानों ने व्यवहार में उत्पन्न हुए शांति मिश्रित परिणामों की ओर इशारा किया है, जो मिश्रित-शांति के रूपों की क्षमता और समस्याओं दोनों को दर्शाता है । यूनिवर्सिटी ऑफ इन्सब्रक, ऑस्ट्रिया में **यूनेस्को चेयर फॉर पीस स्टडीज़ ने 2008 में शांति व्याख्याओं का एक संस्कृति-आधारित वर्गीकरण प्रस्तावित किया**: ऊर्जावान, नैतिक, आधुनिक, उत्तर-आधुनिक और पार-तर्कसंगत (trans-rational) दृष्टिकोण। पार-तर्कसंगत दृष्टिकोण आधुनिक शांति के यंत्रवत तरीकों तथा समाज और संबंध की मौजूदा आध्यात्मिक व्याख्याओं को एक साथ लाता है। इसलिए पार-तर्कसंगत दृष्टिकोण आधुनिक संघर्ष के संकल्पनात्मक दृष्टिकोणों के लिए दृढ़ता से संबंधपरक और संघर्षशील संघर्ष परिवर्तन (लेडरेख) के प्रणालीगत तरीके को प्राथमिकता देता है।

## आलोचना और विवाद:

शांति अध्ययन के विश्वविद्यालय प्रणाली साथ बाहरी जगत से भी शांति और संघर्ष के अध्ययन को कई प्रकार की आलोचनाओं का सामना करना पड़ रहा है, कुछ प्रमुख आलोचनाएँ निम्नवत हैं:

- वैश्विक संघर्षों के प्रबंधन या समाधान के लिए व्यावहारिक नुस्खे का उत्पादन न करें क्योंकि "विचारधारा हमेशा वस्तुनिष्ठता और व्यावहारिकता को रौंद देती है";
- "यह पश्चिमी आत्म-घृणा पर सम्मानजनक चेहरा" डालने पर केंद्रित हैं;
- वे पाखंडी हैं क्योंकि वे शक्तिशाली के खिलाफ वास्तविक या कथित शिकायतों को दूर करने के लिए 'असशक्त' के लिए एक स्वीकार्य रणनीति के रूप में आतंकवाद का मौन या खुलेआम समर्थन करते हैं

(यानी जोहान गाल्टुंग जैसे सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा विकसित वैचारिक रूप से पश्चिमी-विरोधी अवधारणाएं जो यकीनन अनुचित स्वीकार्यता की भावना जोड़ती हैं जिसका उपयोग कट्टरपंथ के समर्थन में किया जाता है)

- मानवाधिकार कार्यकर्ता **कैरोलीन कॉक्स** और दार्शनिक **रोजर स्क्रटन** के अनुसार शांति एवं संघर्ष अध्ययन का पाठ्यक्रम बौद्धिक रूप से असंगत, पूर्वाग्रह से ग्रस्त और अकादमिक स्थिति के अयोग्य है।
- क्या अर्थशास्त्र जैसे विषय संघर्ष-समाधान में पूरी तरह से सक्षम नहीं हैं; जिनके विचारों को संघर्ष की समस्याओं के समाधान के रूप में लागू किया गया था।
- "हिंसा के कारणों को खत्म करने के लिए प्रस्तावित नीतियां" समान रूप से वामपंथी नीतियां हैं, और यह जरूरी नहीं है कि नीतियों के संबंध में सामाजिक वैज्ञानिकों के बीच व्यापक सहमति मिल ही जाए।



नेशनल पोस्ट के स्तंभकार **बारबरा के** ने विशेष रूप से नार्वे के प्रोफेसर जोहान गाल्टुंग, जिन्हें आधुनिक शांति अनुसंधान में अग्रणी माना जाता है, के विचारों की आलोचना की है। बारबरा के ने लिखा है कि गाल्टुंग ने "अमीर,पश्चिमी ईसाई" लोकतंत्रों के "संरचनात्मक फासीवाद" पर लिखा है, फिदेल कास्त्रो की प्रशंसा की है,1956 में हंगरी के सोवियत आक्रमण के प्रतिरोध का विरोध किया, और हांग्जो सोलजेनित्सिन और आंद्रेया सखारोव को "सताए हुए कुलीन व्यक्तियों" के रूप में वर्णित किया है। गाल्टुंग ने चीन को 'अंतहीन मुक्ति' के लिए माओ त्से तुंग की भी प्रशंसा की है । गाल्टुंग ने यह भी कहा है कि संयुक्त राज्य अमेरिका एक "हत्यारा देश" है जो कि "नव फासीवादी राज्य आतंकवाद" का दोषी है और कथित तौर पर वाशिंगटन डी सी के विनाश के लिए अमेरिका की विदेश नीति से दोषी ठहराया है । उन्होंने यूगोस्लाविया के 1999 नाटो बमबारी के दौरान कोसोवो पर बमबारी के लिए अमेरिका की तुलना नाजी जर्मनी से भी की है ।

सिटी जर्नल के 2007 के ग्रीष्मकालीन संस्करण में, **ब्रूस बावेर** ने शांति अध्ययन की आलोचना की। उन्होंने कहा कि अमेरिकी विश्वविद्यालयों में कई शांति अध्ययन कार्यक्रम मार्क्सवादी या सुदूर-वाम प्रोफेसरों द्वारा चलाए जाते हैं। मोटे तौर पर, उन्होंने तर्क दिया कि शांति अध्ययन इस विश्वास पर हावी है कि "अमेरिका ... दुनिया की समस्याओं का स्रोत है" और जबकि शांति अध्ययन के प्रोफेसरों का तर्क है कि आतंकवादी की स्थिति बातचीत के मेज पर सम्मान के लायक है, "वे" शायद ही कभी वैकल्पिक विचारों को सहन करें" और इस प्रकार "शांति अध्ययन, एक नियम के रूप में, अपनी स्वयं की मार्गदर्शक विचारधारा को खारिज करता है”। बावेर दावा करते हैं कि शांति-अध्ययन वामपंथी विचारधारा की हिंसा का समर्थन करती है और अपने दावे के समर्थन में बावेर ने, 2002 में प्रकाशित और व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली, **चार्ल्स पी वेबेल और डेविड पी बाराश** की पुस्तक **पीस एंड कन्फ़्लिक्ट स्टडीस** के एक उद्धरण का हवाल देते हुए कहा है कि, पुस्तक में व्लादिमीर लेनिन की प्रशंसा की गई है क्योंकि उन्होंने "केवल क्रांति को बनाए रखा और सुधार नहीं किए; सुधार पूंजीवाद की प्रवृत्ति – साम्राज्यवाद और युद्ध के लिए – को पूर्ववत कर सकता था।"

**डेविड होरोविट्ज** ने तर्क दिया है कि **चार्ल्स पी वेबेल और डेविड पी बाराश** की पुस्तक समाजवादी कारणों से हिंसा का समर्थन करती है। पुस्तक में कहा गया है कि "क्यूबा का मामला इंगित करता है कि हिंसक क्रांतियां कभी-कभी कई लोगों के लिए आम तौर पर रहने की बेहतर स्थिति प्रदान कर सकती हैं।" होरोविट्ज़ ने यह भी तर्क दिया कि पुस्तक "सोवियत संघ को शांति आंदोलनों के प्रायोजक के रूप में और संयुक्त राज्य अमेरिका को सैन्यवादी, साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में मानती है जो शांति आंदोलनों पर नज़र रखते हैं" और यह कि "लेखक निर्णय करते समय कम्युनिस्ट नीतियों और कार्यों को सही ठहराते हैं जबकि अमेरिका और पश्चिमी लोकतंत्रों को नकारात्मक रूप में प्रस्तुत करते हैं।” होरोविट्ज़ ने यह भी दावा किया कि लेखक क्यूबा के मिसाइल संकट पर चर्चा करते हैं, इसके कारण (जैसे क्यूबा में अमरीका के विरुद्ध सोवियत मिसाइलों को खड़ा करना) का उल्लेख

करते हैं और निकिता ख्रुश्चेव के पीछे हटने को तैयार रहने के लिए प्रशंसा भी करते हैं जबकि जॉन एफ कैनेडी को दोषी ठहराते हैं। अंत में, होरोविट्ज ने मार्क्सवादी लेखकों, जैसे आंद्रे गंडर फ्रैंक और फ्रांसिस मूर लैपे द्वारा "मानव संघर्ष के एकमात्र आधार और कारणों के रूप में गरीबी और भूख" का अध्ययन करने के लिए आलोचना की है।



**के** और **बावेर** ने भी विशेष रूप से प्रोफेसर **गॉर्डन फेलमैन** (अध्यक्ष, शांति, संघर्ष और सह-अस्तित्व अध्ययन कार्यक्रम, ब्रैंडिस यूनिवर्सिटी) की आलोचना की। जिनके बारे में उन्होंने दावा किया है कि उन्होंने इजरायल के खिलाफ फिलिस्तीनी आत्मघाती हमलों को एक दुश्मन पर बदला लेने के तरीके के रूप में उचित ठहराया है; जो चर्चा और न्याय के लिए तर्कसंगत दलीलों का जवाब दे पाने में अनिच्छुक लगता है।

**कैथरीन केर्स्टन** (मिनियापोलिस-स्थित रूढ़िवादी थिंक टैंक सेंटर ऑफ द अमेरिकन एक्सपेरिमेंट में वरिष्ठ फेलो) का मानना है कि शांति अध्ययन कार्यक्रम में "एक निश्चित वैचारिक झुकाव वाले लोगों का प्रभुत्व है, और इसलिए इसको गंभीरता से लेना मुश्किल है।" सेंट थॉमस विश्वविद्यालय में कैथोलिक अध्ययन और प्रबंधन के एक प्रोफेसर **रॉबर्ट कैनेडी** ने 2002 में मिनियापोलिस स्टार ट्रिब्यून के साथ एक साक्षात्कार में अपने विश्वविद्यालय के शांति अध्ययन कार्यक्रम की आलोचना करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम कई सहायक प्रोफेसरों को नियुक्त करता है जिनकी शैक्षणिक योग्यता उतनी मजबूत नहीं है; जैसा कि हम आमतौर पर खोज करेंगे"और यह "वैचारिक दंश और संकाय के कम-से-पूर्ण-शैक्षिक क्रेडेंशियल का संयोजन शायद कुछ सवाल उठाएं कि किस प्रकार से यह विद्वतापूर्ण अध्ययन कार्यक्रम है।

## प्रतिक्रियाएँ:

इस तरह के विचारों का उन विद्वानों ने कड़ा विरोध किया है, जो दावा करते हैं कि ये आलोचनाएँ दुनिया भर में शैक्षणिक और नीतिगत नेटवर्क के माध्यम से हिंसा और शांति अध्ययन की एक विषय के रूप में गतिशीलता के कारणों और विषय के विस्तृत अंतःविषयी दृष्टिकोण, सैद्धांतिक, पद्धतिगत और अनुभवजन्य अनुसंधान के विकास को कम आँकती हैं।

**बारबरा के** के एक लेख के जवाब में, **कनाडा में शांति अध्ययन विशेषज्ञों के एक समूह** ने जवाब दिया कि "बारबरा का तर्क है कि शांति अध्ययन आतंकवाद का समर्थन करता है बकवास है"। ये "समर्पित शांति सिद्धांतकार और प्रतिष्ठित शोधकर्ता हिंसा के उपयोग को कम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं: चाहे यह दुश्मन देशों, दोस्ताना सरकारों या युद्ध-नेताओं द्वारा समर्पित हो। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि, सुश्री बारबरा भोले और आदर्शवादी के रूप में शांति के अधिवक्ताओं को चित्रित करने का प्रयास करती हैं, लेकिन आंकड़ों से पता चलता है कि हाल के दशकों में सशस्त्र संघर्ष को बातचीत के माध्यम से समाप्त किया गया है, सैन्य समाधान से नहीं। समकालीन दुनिया में सशस्त्र संघर्ष को समाप्त करने में हिंसा कूटनीति से कम प्रभावी है। सौ फीसदी अत्याचार और हिंसा को कम करने के लिए कुछ भी प्रभावी नहीं है, लेकिन घरेलू और विदेशी रणनीति के लिए मान्यताओं और बीते युग की भ्रांतियों के बजाय सबूत पर आधारित होने की जरूरत है।

शांति अध्ययन के ज्यादातर विद्वानों का तर्क है कि उन पर आरोप है कि शांति अध्ययन के दृष्टिकोण निष्पक्ष या विषयनिष्ठ नहीं हैं, और मुख्य रूप से वामपंथी स्रोतों से व्युत्पन्न हैं, व्यावहारिक नहीं हैं, हिंसा को अस्वीकार करने बजाय हिंसा का समर्थन करते हैं, या नीतिगत विकास का समर्थन नहीं करते है, स्पष्ट रूप से गलत है। वे ध्यान दें कि संयुक्त राष्ट्र, प्रमुख दाता संस्थाओं, यूरोपीय संघ, अमेरिका, और ब्रिटेन सहित, जापान, कनाडा, नॉर्वे, आदि सहित कई अन्य का संघर्षग्रस्त और उत्तर-संघर्ष देशों में सकारात्मक भूमिका इस तरह की बहसों से प्रभावित है। पिछले दशक और उससे अधिक के समय में इन सरकारों द्वारा प्रमुख नीतिगत दस्तावेजों और प्रतिक्रियाओं की एक श्रृंखला विकसित की गई है, और संयुक्त राष्ट्र (या संबंधित) के दस्तावेज में "शांति के लिए एजेंडा", "विकास के लिए एजेंडा", "लोकतंत्रीकरण के लिए एजेंडा", सहस्राब्दी विकास लक्ष्य, सुरक्षा की जिम्मेदारी (R2P), और

"उच्च स्तरीय पैनल रिपोर्ट" आदि को शामिल किया गया है। विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय विकास एजेंसियों और गैर-सरकारी संगठनों की एक विस्तृत श्रृंखला के काम भी महत्वपूर्ण रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र, यूएनडीपी, संयुक्त राष्ट्र शांति निर्माण आयोग, यूएनएचसीआर, विश्व बैंक, यूरोपीय संघ, यूरोप में सुरक्षा और सहयोग के लिए संगठन, यूएसएड, डीएफआईडी, सिडा, नोराड, डैनिडा, जापान सहायता, जीजेडजेड, और अंतरराष्ट्रीय चेतावनी या अंतर्राष्ट्रीय संकट समूह जैसे अंतरराष्ट्रीय गैर सरकारी संगठनों के साथ-साथ कई स्थानीय गैर सरकारी संगठन भी शांति एवं संघर्ष अध्ययन के विद्वानों तैयार किए गए डेटाबेस पर काम करते हैं।


डॉ अंबिकेश कुमार त्रिपाठी
सहायक प्राध्यापक
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय,
मोतिहारी, बिहार


अंत में, शांति और संघर्ष अध्ययन की बहस आम तौर पर पुष्टि करती है, कि मानव सुरक्षा, मानव अधिकारों, विकास, लोकतंत्र, और कानून के शासन के महत्व पर एक व्यापक आम सहमति (पश्चिमी और परे) भी बनी है (हालांकि वहां एक जीवंत बहस अभी भी जारी है)।